शेक्सपियर वाया प्रो. स्वामीनाथन्

कान्तिकुमार जैन

Scanned with OKEN Scanner

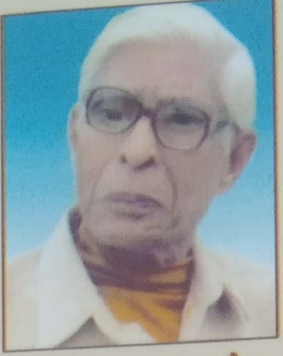

कान्ति कुमार जैन

नौ सितम्बर, 1932 को सागर (म.प्र.) के देवरीकलां में जन्मे कान्तिकुमार जैन ने कोरिया (छत्तीसगढ़) के बैकुंठपुर से 1948 में मैट्रिक करने के बाद उच्च शिक्षा सागर विश्वविद्यालय में प्राप्त की। मैट्रिक में हिन्दी में विशेष योग्यता के लिए उन्हें कोरिया दरबार स्वर्णपदक से नवाजा गया। विश्वविद्यालय की सभी परीक्षाओं में उन्होंने प्रथम श्रेणी, प्रथम स्थान व स्वर्णपदक हासिल किए। 1956 से मध्यप्रदेश के अनेक महाविद्यालयों में शिक्षणोपरांत सन् 1978 से 1992 तक डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में माखनलाल चतुर्वेदी पीठ पर हिन्दी प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष रहे।

कान्तिकुमार जी ने 'छत्तीसगढ़ को जनपदीय शब्दावली' पर शोध तो किया ही, उनकी पुस्तकों– 'छत्तीसगढ़ी बोली : व्याकरण और कोश', 'नई कविता', 'भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य', 'कबीरदास', 'इक्कीसवीं शताब्दी की हिन्दी', 'छायावाद की मैदानी और पहाड़ी शैलियाँ' ने खूब चर्चा बटोरी। सागर विश्वविद्यालय की 'बुंदेली पीठ' की ओर से प्रकाशित बुंदेली–लोकसंस्कृति की पत्रिका 'ईसुरी' के ख्यात सम्पादक रहे कान्तिकुमार जी ने इस पत्रिका की ख्याति को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाया।

कान्तिकुमार जी पिछले डेढ़ दशक से संस्मरण लेखन में सक्रिय हैं। सन् 2002 में प्रकाशित उनकी संस्मरणों की पहली पुस्तक 'लौट कर आना नहीं होगा' के बेहद चर्चित होने के उपरांत 2004 में 'तुम्हारा परसाई', 2006 में 'जो कहूँगा सच कहूँगा' 2007 में 'अब तो बात फैल गई', 2011 में 'बैकुण्ठपुर में बचपन', 2014 में 'महागुरू मुक्तिबोध : जुम्मा टैंक की सीढ़ियों पर', 2015 में 'एक था राजा' शीर्षक से 7 पुस्तकें प्रकाशित हुई जिनकी न सिर्फ हिन्दी संस्मरण साहित्य की दुनिया में खूब चर्चा हुई बल्कि उच्च प्रशंसित होकर संस्मरण की मानक पुस्तकों के रूप में भी उनकी गिनती हुई और आज कान्तिकुमार जी 'संस्मरणाचार्य' के रूप में ख्यात हैं। 'शेक्सपियर वाया प्रो. स्वामीनाथन्' आपके हाथों में है। दो तीन संस्मरण पुस्तकें शीघ्र प्रकाश्य।

सम्पर्क : विद्यापुरम् मकरोनिया कैंप, सागर, मध्यप्रदेश, पिन–5470004

दूरभाष : 07582–262354, मो. : 9098571616

Scanned with OKEN Scanner

शेक्सपियर *वाया* प्रो. स्वामीनाथन्

कान्तिकुमार जैन

अनुज्ञा

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन - फोटो कापी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक / प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2017

ISBN 978-93-83962-91-4 (PB)

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1, वेस्ट गोरख पार्क
शाहदरा, दिल्ली-110 032
फोन : 011-22825424, 09350809192
email: anuugyabooks@gmail.com
www.anuugyabooks.com

मूल्य : 250.00 रुपये

आवरण : मुन्ना कुमार

मुद्रक
अर्पित एण्टरप्राइजेज, दिल्ली-32

SHAKESPEAR VIA PROF. SWAMINATHAN
Memoirs *by* Kanti Kumar Jain

अनुक्रम

प्राक्कथन 7

कुलपति

1. *डॉ. हरीसिंह गौर* : दमड़ी–दमड़ी माया जोड़ी 9
2. *डॉ. रामप्रसाद त्रिपाठी* : ज्ञान के साथ कोई समझौता नहीं 16

गुरुजन

3. *आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी* : भूतपूर्व होने की त्रासदी 34
4. *रामशंकर शुक्ल 'रसाल'* : 'काली घटा' की नूतन 72
5. *राजनाथ पांडेय* : उड़ती चिड़िया के पर कतरने का हुनर 92
6. *डॉ. रामरतन भटनागर* : समुचित मूल्यांकन की प्रतीक्षा 116
7. *शिवशंकर राय* : आत्मीयता का वैभव 125
8. *एस.आर. स्वामीनाथन्* : विलियम शेक्सपियर *वाया* प्रो. स्वामीनाथन् 137
9. *एस. मल्लिकार्जुनन्* : सागर विश्वविद्यालय के ब्रदर टेरेसा 150

कवि

10. *जयशंकर प्रसाद* : प्रसाद विमर्श की 'सागर' मुद्रा 161
11. *बच्चन* : क्षतशीश किन्तु नतशीश नहीं 176
12. *भवानी प्रसाद मिश्र* : कविता से क्रान्ति थोड़ी मुश्किल चीज है 196

मित्र और सहचर

13. *शिवकुमार श्रीवास्तव* : गीत सामान्यजन की सर्वाधिक प्रिय विधा है 212
14. *रजनीश* : भगवान बनने से पहिले 222

शहर से संपर्क

15. *डॉ. लक्ष्मीनारायण सिलाकारी* : बीड़ी कामगारों का मसीहा 249

दैनंदिन जीवन

16. बैरकों के दिन 259

Scanned with OKEN Scanner

रजनीश उस समय रजनीश मोहन जैन थे, सांवले, लंबे और छरहरे। बीस-इक्कीस साल के रहे होंगे। लंबा ढीला कुर्ता और ढीली धोती पहिनते थे। कुर्ता गाढ़े का था, पैरों मे चप्पलें। तब भी वे नकिया कर बोलते। मुझे बहुत अच्छी तरह याद है कि उनके भाषणों में कई बार 'इंसान खों गया है', 'हमारे भीतर की लालटेन बुझ गई है' जैसे वाक्य आए थे। 'इंसान खों गया है' तो उस पूरे भाषण की टेक जैसा था। बड़ा आदर्श से भरा हुआ उनका भाषण था, नए मूल्यों को स्थापित करने का आग्रह लिए हुए एवं अपनी नई खोज की स्वीकृति का इसरार करता हुआ। कुछ अंग्रेजी के शब्द भी उनके भाषण में आए थे। तब वे 'श' नहीं बोल पाते थे, शेक्सपियर को सेक्सपियर बोलते। 'ज' का उच्चारण भी उनके लिए असंभव था। बोलते समय भाषण में उनकी आँखें बंद हो जातीं और लगता वे शून्य को संबोधित कर रहे हैं। बहुत दिनों तक हम लोग छात्रावास में उनके नकियाने और इज, वाज, बिकाज की गाज गिराने की नकल करते रहे थे। अपने अंग्रेजी के प्रोफेसर स्वामीनाथन् साहब की शेक्सपियर की क्लास में जाना होता तो अपने सहपाठी शशिकान्त से कहते—काय ससी, सेक्सपियर पढ़ने नहीं चल रये का। पर इस नकियाने और इज, वाज बिकाज की गाज गिराने के बावजूद रजनीश मोहन जैन प्रथम स्थान के अधिकारी घोषित किए गए थे।

₹ 250

9 789383 962914

अनुज्ञा बुक्स

दिल्ली-110032